ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रभु ने हम में से प्रत्येक को इस पृथ्वी पर इसलिए रखा है कि हम फल लाएँ। इस संदर्भ में दो मूलभूत प्रकार के फल हैं, जिन्हें परमेश्वर हर विश्वास करने वाले से अपेक्षा करता है।
1. धार्मिकता का फल
(आत्मा का फल)
बाइबल सिखाती है कि विश्वासियों को ऐसा फल उत्पन्न करना चाहिए जो परमेश्वर के चरित्र को दर्शाए—जिसे अक्सर आत्मा का फल कहा जाता है:

“यीशु मसीह के द्वारा धार्मिकता के उस फल से भरे हुए, जो परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए है।”
(फिलिप्पियों 1:11)

“पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई,
विश्वास, नम्रता और संयम है।”
(गलातियों 5:22–23)

ये गुण मिलकर एक पवित्र जीवन का वर्णन करते हैं। यह फल केवल मानवीय प्रयासों से उत्पन्न नहीं होता, बल्कि पवित्र आत्मा के द्वारा होने वाले आंतरिक परिवर्तन का परिणाम है

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

(देखें: रोमियों 8:10; यूहन्ना 15:4–5)।
2. परमेश्वर के कार्य का फल
(परमेश्वर के राज्य का प्रभाव)
दूसरे प्रकार का फल परमेश्वर की सेवा में प्रकट होता है, विशेषकर इन बातों के द्वारा:
लोगों को मसीह के पास लाना
परमेश्वर के वचन की शिक्षा देना
सुसमाचार का प्रचार करना
दूसरों की देखभाल करना और उनकी सेवा करना

“इसलिए तुम जाकर सब जातियों को चेला बनाओ…”
(मत्ती 28:19)

यह फल दर्शाता है कि हमने उन बातों के साथ कितनी विश्वासयोग्यता से व्यवहार किया है, जिन्हें परमेश्वर ने हमें सौंपा है।
फलदायकता के बाइबलीय चित्र के रूप में “प्रतिभाएँ” (Talents) पवित्रशास्त्र इस ज़िम्मेदारी को अक्सर “प्रतिभाओं” के उदाहरण से समझाता है। यीशु इसे सौंपे गए प्रतिभाओं के दृष्टांत में स्पष्ट करते हैं
(मत्ती 25:14–30 – संक्षेप में):

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

एक स्वामी अपने दासों को उनकी क्षमता के अनुसार प्रतिभाएँ सौंपता है
दो दास उनका उपयोग करते हैं और और अधिक प्राप्त करते हैं एक दास अपनी प्रतिभा को गाड़ देता है और कोई फल नहीं लाता विश्वासी दासों की प्रशंसा की जाती है:

“अच्छा किया, हे भले और विश्वासयोग्य दास… अपने स्वामी के आनन्द में प्रवेश कर।”
(मत्ती 25:21)

परन्तु अविश्वासी दास को डाँटा और दण्डित किया जाता है:

“क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा… और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।”
(मत्ती 25:29)

“प्रतिभा” शब्द का गहरा अर्थ
यह दृष्टांत केवल आत्मिक वरदानों की ही बात नहीं करता

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

(जैसे शिक्षा, भविष्यवाणी, सुसमाचार प्रचार, चरवाहगीरी—देखें: रोमियों 12:6–8; इफिसियों 4:11),

बल्कि इसका एक और भी गहरा अर्थ है:
� जो कुछ तुम सुनते हो, वह भी एक प्रतिभा है।
हर बार जब तुम परमेश्वर का वचन सुनते हो, तो एक प्रतिभा तुम्हारे हृदय में बोई जाती है।

“इस प्रकार विश्वास सुनने से उत्पन्न होता है, और सुनना
मसीह के वचन के द्वारा।”
(रोमियों 10:17)

परमेश्वर केवल इस बात का ही हिसाब नहीं माँगेगा कि हमने क्या पाया, बल्कि इस बात का भी कि हमने जो सुना, उसके साथ क्या किया। बोने वाले का दृष्टांत
यीशु इस सिद्धांत को मत्ती 13:1–23 में विस्तार से समझाते हैं: कुछ लोग वचन को सुनते हैं, पर समझते नहीं—शत्रु उसे छीन लेता है कुछ उसे आनन्द से ग्रहण करते हैं, पर जड़ न होने के कारण गिर जाते हैं

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

कुछ सुनते हैं, पर संसार की चिन्ताएँ और लालसाएँ उसे दबा देती हैं
अच्छे लोग सुनते हैं, समझते हैं और तीस, साठ या सौ गुना फल लाते हैं
यीशु निष्कर्ष निकालते हैं:

“क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास
नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।”
(मत्ती 13:12)

यीशु दृष्टांतों में क्यों सिखाते थे
यीशु जानबूझकर दृष्टांतों में बोलते थे। जो लोग उन्हें

सुनते थे, उनमें से सभी समझ पाने के लिए तैयार नहीं थे: “क्योंकि वे देखते हुए नहीं देखते, और सुनते हुए नहीं सुनते,
और न समझते हैं।”
(मत्ती 13:13)

केवल उनके चेले उनके पास आए और व्याख्या माँगी। उन्होंने सुने

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

हुए को गाड़ा नहीं, बल्कि समझ की खोज की—और आत्मिक रूप से बढ़े:

“मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; खोजो, तो पाओगे।”
(मत्ती 7:7)

व्यावहारिक उपयोग: आज प्रतिभाएँ कैसे गाड़ी जाती हैं
बहुत से लोग बार-बार परमेश्वर का वचन सुनते हैं, पर वे:
उसे लागू नहीं करते
समझ की खोज नहीं करते
आत्मिक बोध (conviction) को अनदेखा करते हैं
यह वास्तव में प्रतिभा को गाड़ देने जैसा ही है।

“परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, केवल सुनने वाले नहीं; नहीं
तो अपने आप को धोखा देते हो।”
(याकूब 1:22)

जब परमेश्वर पाप, पवित्रता, आज्ञाकारिता या सत्य के विषय में हमें सचेत करता है, तो वह चेतावनी एक प्रतिभा है। परमेश्वर उससे मन फिराव, वृद्धि और फल की अपेक्षा करता है।

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

“अब परमेश्वर मनुष्यों को आज्ञा देता है कि सब लोग हर जगह मन फिराएँ।”
(प्रेरितों के काम 17:30)

एक गंभीर चेतावनी — और एक प्रतिज्ञा
यीशु एक चेतावनी भी देते हैं और एक प्रतिज्ञा भी:

“ध्यान से देखो कि तुम क्या सुनते हो! जिस माप से तुम मापते हो, उसी से तुम्हारे लिए मापा जाएगा, और तुम्हें और भी दिया जाएगा।”
(मरकुस 4:24–25)

जो प्रतिक्रिया देता है, उसे और प्रकाश मिलता है
जो अनदेखा करता है, उससे वह भी ले लिया जाता है जो उसके पास था पर जो पूरे मन से आज्ञाकारिता करना चाहते हैं, उनके लिए यह प्रतिज्ञा है:

“यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह जान लेगा कि यह

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

शिक्षा परमेश्वर की ओर से है या नहीं।”
(यूहन्ना 7:17)

अंतिम प्रोत्साहन
ध्यान दो कि तुम क्या सुनते हो—और उससे भी अधिक, कि तुम उस पर कैसे प्रतिक्रिया देते हो।
शत्रु को यह अवसर न दो कि वह वह वचन छीन ले, जो तुम्हारे हृदय में बोया गया है।
फल लाओ—पवित्र जीवन के द्वारा भी और विश्वासयोग्य सेवा के द्वारा भी—ताकि जब प्रभु फिर आए, तो वह आत्मिक वृद्धि के प्रमाण पाए।

“इससे मेरा पिता महिमा पाता है कि तुम बहुत फल लाओ और मेरे
चेले ठहरो।”
(यूहन्ना 15:8)

प्रार्थना
प्रभु करे कि तुम जो कुछ भी सुनते हो, उसके अनुसार चलना आरम्भ करो, ताकि जब प्रभु फिर आए, तो वह ऐसा फल पाए जो उसके नाम की महिमा करे।

ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो(लूका 8:18; मरकुस 4:24)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp